INDEX

DAILY CURRENT AFFAIRS NOTES

3rd August 2022

1. - नई स्टार्ट संधि के बारे में: 3

2. - वक्फ बोर्ड का विवरण: 3
   - (i) के बारे में: 3
   - (ii) वक्फ बोर्ड कैसे बनते हैं? 3
   - (iii) वक्फ बोर्ड की प्रक्रिया क्या है? 4
   - (iv) संयोजन: 4
   - (v) अन्य सूचना: 4

3. - पिंगली वेंकैया के बारे में: 5
   - (i) वह कौन था? 5
   - (ii) भारत के राष्ट्रीय ध्वज का विकास: 5

4. - वित्तीय समावेशन सूचकांक का विवरण: 6
   - (i) के बारे में: 6
   - (ii) उद्देश्य: 6
   - (iii) पैरामीटर: 6
   - (iv) सूचकांक की प्रासंगिकता: 6

संपादकीय विश्लेषण 7

1. भारत ताइवान संबंध: 7
   - (i) ताइवान और भारतीय विदेश नीति: 7
   - (ii) भारत-ताइवान संबंध: 7
   - (iii) भारत के लिए ताइवान का महत्व: 7
   - (iv) क्या किये जाने की आवश्यकता है? 7

(v) ताइवान और चीन के बीच संबंधों का इतिहास:..... 7

2. भारत में क्रिप्टोमुद्रा विनियमन: 9

(i) वर्तमान स्थिति: 9

(ii) क्रिप्टोक्यूरेंसी: यह क्या है? 9

(iii) ब्लॉकचेन तकनीक के संचालन का तरीका क्या है? 9

(iv) ब्लॉकचेन के लाभ: 10

(v) क्रिप्टोक्यूरेंसी विनियमन क्यों आवश्यक है? 10

(vi) क्रिप्टोकरेंसी के बारे में लोगों को क्या चिंता है?..... 10

(vii) आगे कैसे जारी रखें: 11

(viii) निष्कर्ष:..... 12

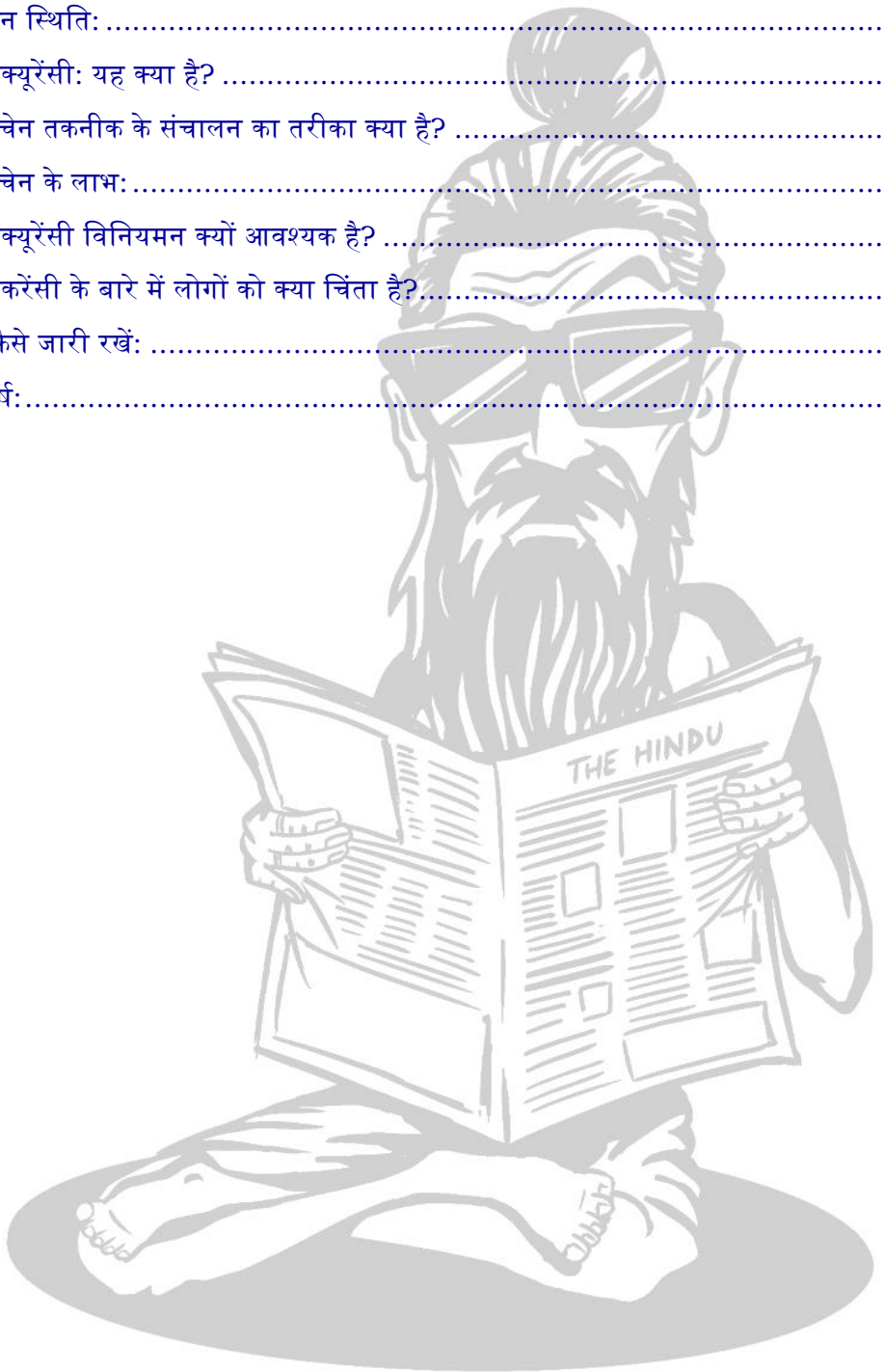

1. - नई स्टार्ट संधि के बारे में:

GS II

विषय→अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

- रूसी संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका ने नई START संधि पर हस्ताक्षर किए, जो रणनीतिक आक्रामक हथियारों को और कम करने और सीमित करने के उपायों की रूपरेखा तैयार करती है।
- समझौता 5 फरवरी, 2011 को लागू होता है।
- इसका उद्देश्य START ढांचे को प्रतिस्थापित करना है, जिसने 1991 में वारहेड्स और रणनीतिक वितरण वाहनों की संख्या पर एक सीमा निर्धारित की थी जो दोनों पक्षों द्वारा (शीत युद्ध के समापन के बाद) तैनात किए जा सकते थे।
- यह अमेरिका और रूस के रणनीतिक परमाणु शस्त्रागार को कम करने की द्विदलीय प्रक्रिया को जारी रखता है, जिसमें प्रत्येक पक्ष को 700 रणनीतिक लांचर और 1,550 ऑपरेशनल वॉरहेड्स तक सीमित रखा जाता है।
- जब तक इसे अतिरिक्त पांच वर्षों के लिए नवीनीकृत नहीं किया जाता, यह फरवरी 2021 में समाप्त हो जाता है।

- ***स्रोत→ इंडियन एक्सप्रेस***

2. - वक्फ बोर्ड का विवरण:

GS II

विषय→सांविधिक और गैर-सांविधिक निकाय

के बारे में:

- भगवान के नाम पर धार्मिक या धर्मार्थ कार्यों के लिए धन या अन्य संसाधन देना।
- कानून के अनुसार, मुस्लिम कानून द्वारा मान्यता प्राप्त किसी भी चल या अचल संपत्ति का स्थायी समर्पण इस्लाम को मानने वाले व्यक्ति द्वारा पवित्र, धार्मिक या परोपकारी के रूप में मान्यता प्राप्त है।

वक्फ बोर्ड कैसे बनते हैं?

- एक संपत्ति एक वक्फ बन सकती है यदि इसे लंबे समय तक धार्मिक या दान उद्देश्यों के लिए लगातार उपयोग किया जाता है; अन्यथा, एक विलेख या अन्य कानूनी दस्तावेज के प्रारूपण द्वारा एक वक्फ बनाया जा सकता है।
- धन आमतौर पर मस्जिदों, कब्रिस्तानों, स्कूलों और आश्रय गृहों का समर्थन करने के लिए उपयोग किया जाता है।
- वक्फ एक चालू इकाई बना रहेगा, जिससे उस व्यक्ति के लिए यह असंभव हो जाएगा जिसने इसकी स्थापना की थी।
- एक गैर-मुस्लिम भी वक्फ बना सकता है, लेकिन उन्हें इसे इस्लामी लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए और इस तरह से करना चाहिए जो इस्लाम की घोषणा करता है।

वक्फ बोर्ड की प्रक्रिया क्या है?

- यह 1995 वक्फ अधिनियम द्वारा शासित है।
- अधिनियम के अनुसार, एक सर्वेक्षण आयुक्त से स्थानीय शोध करने, गवाहों से बात करने और सार्वजनिक रिकॉर्ड हासिल करने की अपेक्षा की जाती है ताकि वक्फ के रूप में नामित सभी संपत्तियों की सूची तैयार की जा सके।
- एक प्रबंधक जो मुतावली के रूप में दोगुना हो जाता है, वक्फ की गतिविधियों की देखरेख करता है। इस तथ्य के बावजूद कि धर्मार्थ और धार्मिक लोगों के अलावा अन्य उद्देश्यों के लिए ट्रस्ट बनाए जा सकते हैं, यह 1882 के भारतीय ट्रस्ट अधिनियम के अनुपालन में बनाए गए एक के बराबर है। वक्फ के विपरीत, बोर्ड द्वारा एक ट्रस्ट को भी भंग किया जा सकता है।
- इसे किसी भी प्रकार की संपत्ति खरीदने, रखने और स्थानांतरित करने की अनुमति है।
- एक कानूनी संगठन या न्यायिक व्यक्ति के रूप में अपनी स्थिति के कारण, बोर्ड कानूनी दावे लाने और अदालत में मुकदमा चलाने में सक्षम है।

संयोजन:

- वक्फ बोर्ड, जिसमें एक अध्यक्ष, एक या दो राज्य सरकार के नामांकन, मुस्लिम सांसद और सांसद, मुस्लिम राज्य बार काउंसिल के सदस्य, मान्यता प्राप्त इस्लामी विद्वान, और वक्फ के मुतवलिस रुपये की वार्षिक आय के साथ शामिल हैं। 1 लाख और अधिक, हर राज्य में मौजूद है।

अन्य सूचना:

- कानून के अनुसार, वक्फ की संपत्ति की निगरानी के लिए वक्फ बोर्ड जिम्मेदार है और वक्फ के स्वामित्व वाली किसी भी अचल संपत्ति को बिक्री, उपहार, बंधक, विनिमय, या पट्टे के माध्यम से स्थानांतरित करने से पहले उसे अनुमति लेनी होगी। हालांकि, जब तक वक्फ बोर्ड के कम से कम दो-तिहाई सदस्य लेन-देन के पक्ष में मतदान नहीं करते, तब तक मंजूरी नहीं दी जाएगी।
- *स्रोत→ हिन्दू*

3. - पिंगली वेंकैया के बारे में:

प्रीलिम्स विशिष्ट विषय

वह कौन था?

- उनका जन्म 2 अगस्त, 1876 को आंध्र प्रदेश में हुआ था।
- उनका दूसरा नाम "झंडा वेंकैया" है।
- पिंगली वेंकय्या एक राष्ट्रवादी थे जिन्होंने भारतीय राष्ट्रीय तिरंगे को भी डिजाइन किया था।
- वर्तमान राष्ट्रीय ध्वज उनके द्वारा बनाया गया था।

भारत के राष्ट्रीय ध्वज का विकास:

- 1918 और 1921 के बीच, वेंकय्या ने कांग्रेस के प्रत्येक सत्र के दौरान एक व्यक्तिगत ध्वज के मालिक होने का विचार लाया। उस समय, वह मछलीपट्टनम के आंध्र नेशनल कॉलेज में व्याख्याता थे।
- वह विजयवाड़ा में फिर से महात्मा के पास दौड़े, और इस बार उन्होंने उन्हें विभिन्न ध्वज डिजाइनों के साथ अपनी पुस्तक दिखाई। 1921 में राष्ट्रीय कांग्रेस की बैठक में, गांधी ने एक नए राष्ट्रीय ध्वज की आवश्यकता को स्वीकार किया और वेंकय्या को इसे डिजाइन करने के लिए कहा।
- शुरुआत में केसर और हरा प्राथमिक रंग थे, लेकिन बाद में वेंकय्या ने रचना में एक सफेद तीसरा रंग और एक चरखा जोड़ा। (लाला हंस राज सोंधी ने स्वतंत्र भारतीयों को दिखाने के लिए एक कताई चक्र को शामिल करने की सिफारिश की, जो स्थानीय रेशों से अपने स्वयं के कपड़े कताई करने में सक्षम हैं।)
- ध्वज को औपचारिक रूप से 1931 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा स्वीकार किया गया था।

- ***स्रोत→ इंडियन एक्सप्रेस***

4. - वित्तीय समावेशन सूचकांक का विवरण:

प्रीलिम्स विशिष्ट विषय

के बारे में:

- सूचकांक की अवधारणा एक व्यापक सूचकांक के रूप में की गई थी जिसमें सरकार और प्रासंगिक क्षेत्रीय नियामकों के सहयोग से बैंकिंग, निवेश, बीमा, डाक और पेंशन क्षेत्रों पर डेटा शामिल किया गया था।
- इसका अनावरण हर साल जुलाई में किया जाएगा।
- इसे "आधार वर्ष" के उपयोग के बिना बनाया गया था और इसके परिणामस्वरूप, यह समय के साथ वित्तीय समावेशन को आगे बढ़ाने के लिए सभी हितधारकों के संचयी प्रयासों का सटीक प्रतिनिधित्व है।

उद्देश्य:

- वित्तीय समावेशन के देश के समग्र स्तर का आकलन करना।

पैरामीटर:

- यह 0 और 100 के बीच एक ही मान में वित्तीय समावेशन के कई पहलुओं पर जानकारी एकत्र करता है, जहां 0 पूर्ण वित्तीय बहिष्करण का प्रतिनिधित्व करता है और 100 पूर्ण वित्तीय समावेशन का प्रतिनिधित्व करता है।
- इसके तीन मुख्य घटक एक्सेस (35 प्रतिशत), उपयोग (45 प्रतिशत), और गुणवत्ता (20 प्रतिशत) हैं, जिनमें से प्रत्येक कई आयामों से बना है और कई अलग-अलग मीट्रिक द्वारा निर्धारित किया जाता है।
- सेवा की उपयोगिता, पहुंच और गुणवत्ता के लिए सूचकांक के मानदंडों के अनुसार, सभी 97 संकेत उत्तरदायी हैं।

सूचकांक की प्रासंगिकता:

- वित्तीय सेवाओं को आंतरिक नीति-निर्माण उद्देश्यों के लिए मापा जाता है, और वित्तीय समावेशन की सीमा के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई जाती है।
- इसे प्रगति के समग्र संकेत के रूप में तुरंत इस्तेमाल किया जा सकता है।
- G20 संकेतकों का अनुपालन इसके परिणामस्वरूप G20 वित्तीय समावेशन संकेतकों की कसौटी को पूरा किया जा सकता है।
- राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर, G20 संकेतक डिजिटल वित्तीय सेवाओं और वित्तीय समावेशन की स्थिति का आकलन करते हैं।
- शोधकर्ता सहायता: वित्तीय समावेशन और अन्य व्यापक आर्थिक मुद्दों के परिणामों का अध्ययन भी शोधकर्ताओं के लिए आसान बना दिया गया है।
- *स्रोत→ हिन्दू*

संपादकीय विश्लेषण

1. भारत ताइवान संबंध:

ताइवान और भारतीय विदेश नीति:

- भारत की ताइवान के प्रति एक स्पष्ट और सुसंगत रणनीति है जिसका उद्देश्य व्यापार, पर्यटन और निवेश सहित कई क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाना है।
- सरकार व्यापार, निवेश, पर्यटन और संस्कृति के क्षेत्रों में लोगों के बीच बातचीत और विचारों का आदान-प्रदान करना आसान बनाती है।
- भले ही ताइवान और भारत के बीच कोई औपचारिक राजनयिक संबंध नहीं हैं, फिर भी दोनों देशों के बीच व्यापार और व्यक्तिगत आदान-प्रदान होता है।

भारत-ताइवान संबंध:

- हालांकि उनके आधिकारिक राजनयिक संबंध नहीं हैं, ताइवान और भारत कई परियोजनाओं पर एक साथ काम कर रहे हैं।
- भारत ने 2010 से "एक-चीन" नीति का समर्थन करने से परहेज किया है।

भारत के लिए ताइवान का महत्व:

- ताइवान का लक्ष्य विभिन्न देशों के साथ संबंधों में सुधार करना है।
- चीन के तीव्र सैन्य दबाव के हिस्से के रूप में, चीनी जेट विमानों ने लोकतांत्रिक ताइवान के करीब कई मिशनों को उड़ाया है, जिसे बीजिंग अपना दावा करता है और सैन्य रूप से कब्जा करने से इंकार नहीं करता है।
- भारत और ताइवान अपने 25 साल के सहयोग का जश्न मना रहे हैं।
- दिल्ली और ताइपे के बीच संयुक्त प्रयासों ने कृषि, निवेश, सीमा शुल्क सहयोग, नागरिक उड्डयन, औद्योगिक सहयोग, और अन्य सहित कई क्षेत्रों में कई द्विपक्षीय समझौतों को सक्षम किया है। यह बदलते संबंध इंगित करते हैं कि भारत-ताइवान संबंधों की समीक्षा होनी चाहिए।

क्या किये जाने की आवश्यकता है?

- दोनों पक्ष एक निर्धारित समय सीमा के भीतर रणनीति विकसित करने के लिए एक टास्क फोर्स या सक्षम विशेषज्ञों की एक टीम स्थापित कर सकते हैं।
- स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में और अधिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए यह सही समय है।
- अपनी जैव-संगत तकनीकों की बदौलत ताइवान इस चुनौती से निपटने में एक मूल्यवान सहयोगी साबित हो सकता है।

ताइवान और चीन के बीच संबंधों का इतिहास:

- चीनी गृहयुद्ध के कारण, जिसने पराजित कुओमितांग, या राष्ट्रवादी को 1949 में द्वीप पर भागने के लिए प्रेरित किया, चीन ने अपनी "एक चीन" नीति के माध्यम से ताइवान पर दावा किया है और यदि आवश्यक हो तो बल द्वारा इसे जब्त करने की कसम खाई है।

- मुख्य भूमि से स्वशासी और वास्तविक स्वतंत्र होने के बावजूद, ताइवान ने कभी भी औपचारिक रूप से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा नहीं की है।
- "एक राष्ट्र, दो प्रणाली" मॉडल के तहत, ताइवान को अपने मामलों को चलाने की अनुमति होगी; इसी तरह की व्यवस्था हांगकांग में पहले से ही लागू है।
- वर्तमान में, चीन ताइवान पर अपना दावा जताता है और ऐसा करने वाले देशों के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करने से इनकार करता है।

2. भारत में क्रिप्टोमुद्रा विनियमन:

वर्तमान स्थिति:

- वर्तमान में 462 क्रिप्टोक्यूरेंसी एक्सचेंज और 17,697 क्रिप्टो-सिक्के उपयोग में हैं।
- भारत में क्रिप्टोकरेंसी का उपयोग अब किसी भी प्रतिबंध से अप्रतिबंधित और अनियमित है।
- आरबीआई का स्थान मार्च 2020 के सुप्रीम कोर्ट के फैसले से पहले, बैंकों को भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के नियमों के तहत भारत में क्रिप्टोकुरेंसी लेनदेन का समर्थन करने की अनुमति नहीं थी।
- आरबीआई ने अक्सर इस बात पर जोर दिया है कि वह क्रिप्टोकरेंसी से कितना गहरा संबंध रखता है और देश की व्यापक आर्थिक और वित्तीय स्थिरता के लिए कितना खतरनाक है।
- क्रिप्टोग्राफी पर सरकार की स्थिति: भारत सरकार इस क्षेत्र को नियंत्रित करने के लिए कानून का मसौदा तैयार कर रही है।

क्रिप्टोक्यूरेंसी: यह क्या है?

- किसी भी तरह का पैसा जो डिजिटल या वर्चुअल रूप से मौजूद है और सुरक्षित लेनदेन के लिए एन्क्रिप्शन का उपयोग करता है उसे क्रिप्टोकुरेंसी के रूप में जाना जाता है, जिसे कभी-कभी क्रिप्टो-मुद्रा या क्रिप्टो के रूप में जाना जाता है। क्रिप्टोकरेंसी एक केंद्रीय निकाय द्वारा बनाए और शासित होने वाली फिएट मुद्राओं के विपरीत लेनदेन को ट्रैक करने और नई इकाइयाँ बनाने के लिए एक विकेन्द्रीकृत प्रणाली का उपयोग करती है।
- ब्लॉकचैन, एक विकेन्द्रीकृत पीयर-टू-पीयर नेटवर्क, इसे रेखांकित करता है।

ब्लॉकचेन तकनीक के संचालन का तरीका क्या है?

- ब्लॉकचेन तकनीक यह सुनिश्चित करती है कि प्रत्येक बिटकॉइन लेनदेन वित्तीय गतिविधियों के सार्वजनिक डेटाबेस में दर्ज किया जाए।
- लोकप्रियता के मामले में रिपल, एथेरियम और बिटकॉइन शीर्ष तीन क्रिप्टोकरेंसी हैं।
- इलेक्ट्रॉनिक डेटाबेस या लेजर जो डेटा को "ब्लॉक" के रूप में संग्रहीत करते हैं जो "चेन" बनाने के लिए एक साथ जुड़े होते हैं, उन्हें शब्द में "ब्लॉकचेन" कहा जाता है।
- यह ऑडिटेबिलिटी, रीयल-टाइम ट्रांजैक्शन पारदर्शिता, और छेड़छाड़-स्पष्ट स्थायी रिकॉर्ड रखने का एक अनूठा संश्लेषण प्रदान करता है।
- नेटवर्क में अन्य उपकरणों से जुड़े प्रत्येक उपयोगकर्ता या कंप्यूटर की ब्लॉकचेन तक पहुंच होती है।
- प्रत्येक नई जानकारी जो एक नए ब्लॉक के माध्यम से जोड़ी या बदली जाती है, के लिए आधे से अधिक उपयोगकर्ताओं की समीक्षा और अनुमोदन की आवश्यकता होती है।

ब्लॉकचेन के लाभ:

- बड़े पैमाने पर महत्वपूर्ण सूचना प्रबंधन, संग्रह, पुनर्प्राप्ति और सुरक्षा कार्य सभी ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी द्वारा उपलब्ध कराई गई प्रगति से लाभान्वित हो सकते हैं।
- चिकित्सा जानकारी, शैक्षणिक सामग्री का प्रबंधन, संपत्ति के स्वामित्व पर डेटा को संरक्षित करना, पेशेवर संदर्भों का प्रबंधन और वित्तीय लेनदेन डेटा का प्रबंधन इनमें से कुछ हैं (जैसे कि क्रिप्टोकरेंसी के मामले में)।
- ब्लॉकचैन एक विकेन्द्रीकृत तकनीक है, इसलिए वहां रखा गया सिस्टम और डेटा भरोसेमंद, खुला और धोखाधड़ी-सबूत है।
- भारत में अभी क्रिप्टोकरेंसी की क्या स्थिति है?
- केंद्रीय बजट 2022-2023 में आगामी वित्तीय वर्ष में कार्यान्वयन के लिए एक डिजिटल मुद्रा का भी सुझाव दिया गया था।
- भारत में बिटकॉइन का स्वामित्व अभी भी वैध है, भले ही वर्तमान में क्रिप्टोकरेंसी को कवर करने वाला कोई कानून नहीं है।
- जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, आभासी संपत्ति लाभ अब 30% कर के अधीन होगा।
- अल साल्वाडोर ने चीन के विपरीत बिटकॉइन को कानूनी निविदा के रूप में मान्यता दी है, जिसने अनिवार्य रूप से सभी क्रिप्टोकुरेंसी लेनदेन को रोक दिया है।

क्रिप्टोक्यूरेंसी विनियमन क्यों आवश्यक है?

- सरकार को क्रिप्टोकरेंसी के लिए एक अलग नियम बनाना चाहिए क्योंकि इसे कानूनी निविदा के रूप में नहीं माना जाता है और इसे एक अलग वर्ग के रूप में मान्यता देने की आवश्यकता होती है।
- आरबीआई के अनुसार, पीयर-टू-पीयर लेंडिंग - जिसे स्पष्ट रूप से विनियमन की आवश्यकता है - संभव हो सकता है यदि व्यक्ति क्रिप्टोकुरेंसी का उपयोग पैसे के रूप में करना शुरू कर देते हैं।
- क्रिप्टोक्यूरेंसी विनियमन महत्वपूर्ण मुद्दों से बचने के लिए महत्वपूर्ण है, यह सुनिश्चित करें कि उन्हें अवैध रूप से नियंत्रित नहीं किया जाता है, और नौसिखिए निवेशकों को उच्च बाजार की अस्थिरता और संभावित घोटालों से बचाते हैं।
- क्रिप्टोकरेंसी को एक्सचेंज मैकेनिज्म के बजाय एसेट क्यों माना जाता है?
- क्रिप्टोकरेंसी का मौलिक लाभ यह है कि वे बहुत तेज और अधिक किफायती लेनदेन प्रसंस्करण की अनुमति देते हैं क्योंकि वे बिचौलियों की आवश्यकता को दूर करते हैं और लेनदेन को सीधे उनके इच्छित प्राप्तकर्ताओं तक जाने में सक्षम बनाते हैं। हालाँकि, ये लाभ भारत में उपलब्ध नहीं हैं।
- क्रिप्टोक्यूरेंसी को डिजिटल संपत्ति के रूप में मान्यता देकर, भारत सरकार केवल मूल्य वृद्धि से लाभ प्राप्त कर सकती है, जबकि शेष दुनिया मूल उद्देश्य के लिए उनका उपयोग करेगी।

क्रिप्टोकरेंसी के बारे में लोगों को क्या चिंता है?

- तेजी से नकदी बनाने के साधन के रूप में बिटकॉइन बाजार का विपणन करने वाले विपणन की बाढ़ है। इस बाजार में सट्टा लगाने के लिए लोगों को लुभाने के लिए ऑफलाइन और ऑनलाइन विज्ञापनों की भरमार है।

- इस बीच, चिंताएं हैं कि ये "अति-वादा" और "गैर-पारदर्शी विज्ञापन" द्वारा युवाओं को धोखा देने के प्रयास हैं।
- मनी लॉन्ड्रिंग और आतंकवाद के वित्तपोषण दोनों अनियमित बिटकॉइन एक्सचेंजों पर संभव हैं।
- मैक्रोइकॉनॉमिक और वित्तीय स्थिरता: भारतीय खुदरा निवेशकों के इस अनियंत्रित परिसंपत्ति वर्ग के जोखिम के पैमाने के कारण व्यापक आर्थिक और वित्तीय स्थिरता के लिए जोखिम है।
- शेयर बाजार के साथ मुद्दों में से एक यह है कि भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के पास क्रिप्टोकरेंसी के "समाशोधन और निपटान" पर कोई अधिकार नहीं है और यह शेयरों के लिए प्रतिपक्ष आश्वासन प्रदान करने में असमर्थ है।
- इसके अलावा, यह स्पष्ट नहीं है कि क्रिप्टोकरेंसी निवेश, कमोडिटी या पैसा है या नहीं।
- ब्लॉकचेन तकनीक के साथ कई मुद्दे हैं, जो कि क्रिप्टोकरेंसी के लिए एक शर्त है।
- कम मापनीयता: कम संख्या में उपयोगकर्ताओं के साथ ब्लॉकचेन सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं। हालाँकि, अधिक लोग नेटवर्क में शामिल होने के कारण स्थानांतरण को संसाधित होने में अधिक समय लगता है।
- इसलिए लेनदेन सामान्य से अधिक महंगा था। यह नेटवर्क तक अधिक उपयोगकर्ताओं की पहुंच को भी सीमित करता है।
- नेटवर्क हमलों के लिए ब्लॉकचेन की भेद्यता इस तथ्य से उपजी है कि वे शुरू में नेटवर्क प्रोटोकॉल के साथ उपयोग करने के लिए अभिप्रेत नहीं थे। जैसे-जैसे ब्लॉकचेन सेवाओं की मांग बढ़ती है, खतरनाक फाइलों और भड़काऊ सामग्री की शुरूआत के साथ समस्याएं होती हैं।
- यह गोपनीयता के आक्रमण, शायद अवैध डेटा, कॉपीराइट के उल्लंघन, संक्रमण आदि के बारे में चिंताओं को सामने लाता है।

आगे कैसे जारी रखें:

- ठोस केवाईसी मानक: क्रिप्टोक्यूरेंसी ट्रेडिंग पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाने के बजाय, सरकार सख्त केवाईसी दिशानिर्देशों, रिपोर्टिंग आवश्यकताओं और कर योग्यता को लागू कर सकती है।
- चूंकि ग्राहक लेनदेन शुरू करने के लिए अपने बैंक खातों का उपयोग करते हैं, लेनदेन के समय केवाईसी दस्तावेज हमेशा दो स्तरों पर होते हैं: विनिमय स्तर और बैंक स्तर।
- "क्रिप्टोकरेंसी" शब्द का अर्थ क्रिप्टोक्यूरेंसी को पहले कानूनी और नियामक ढांचे द्वारा संबंधित राष्ट्रीय कानूनों के तहत प्रतिभूतियों या अन्य वित्तीय उत्पादों के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए। इस प्राधिकरण को धारण करने वाले नियामक निकाय को भी इस ढांचे में पहचाना जाना चाहिए।
- पारदर्शिता को प्राथमिकता देना पारदर्शिता, सूचना पहुंच और उपभोक्ता संरक्षण, रिकॉर्ड कीपिंग, निरीक्षण, स्वतंत्र ऑडिट, निवेशक शिकायत निवारण और विवाद निपटान के साथ कठिनाइयों को दूर करने के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है।
- बिटकॉइन और ब्लॉकचेन तकनीक भारत के स्टार्टअप वातावरण में ब्लॉकचेन डेवलपर्स, डिजाइनरों, परियोजना प्रबंधकों, व्यापार विश्लेषकों, प्रमोटरों और विपणक के लिए रोजगार के अवसर पैदा कर सकती है, जिससे देश की उद्यमशीलता में वृद्धि हो सकती है।

- नियामक संरचना: आधिकारिक डिजिटल मुद्रा विधेयक, 2021 का क्रिप्टोक्यूरेंसी और विनियमन, जो अभी तक भारत में पारित नहीं हुआ है, एक "आधिकारिक डिजिटल मुद्रा" के विकास के लिए विधायी आधार तैयार करेगा।
- इसलिए, बिल के पारित होने में तेजी लाना और क्रिप्टोकरेंसी के प्रबंधन के लिए एक कानूनी ढांचा तैयार करना अनिवार्य है।

निष्कर्ष:
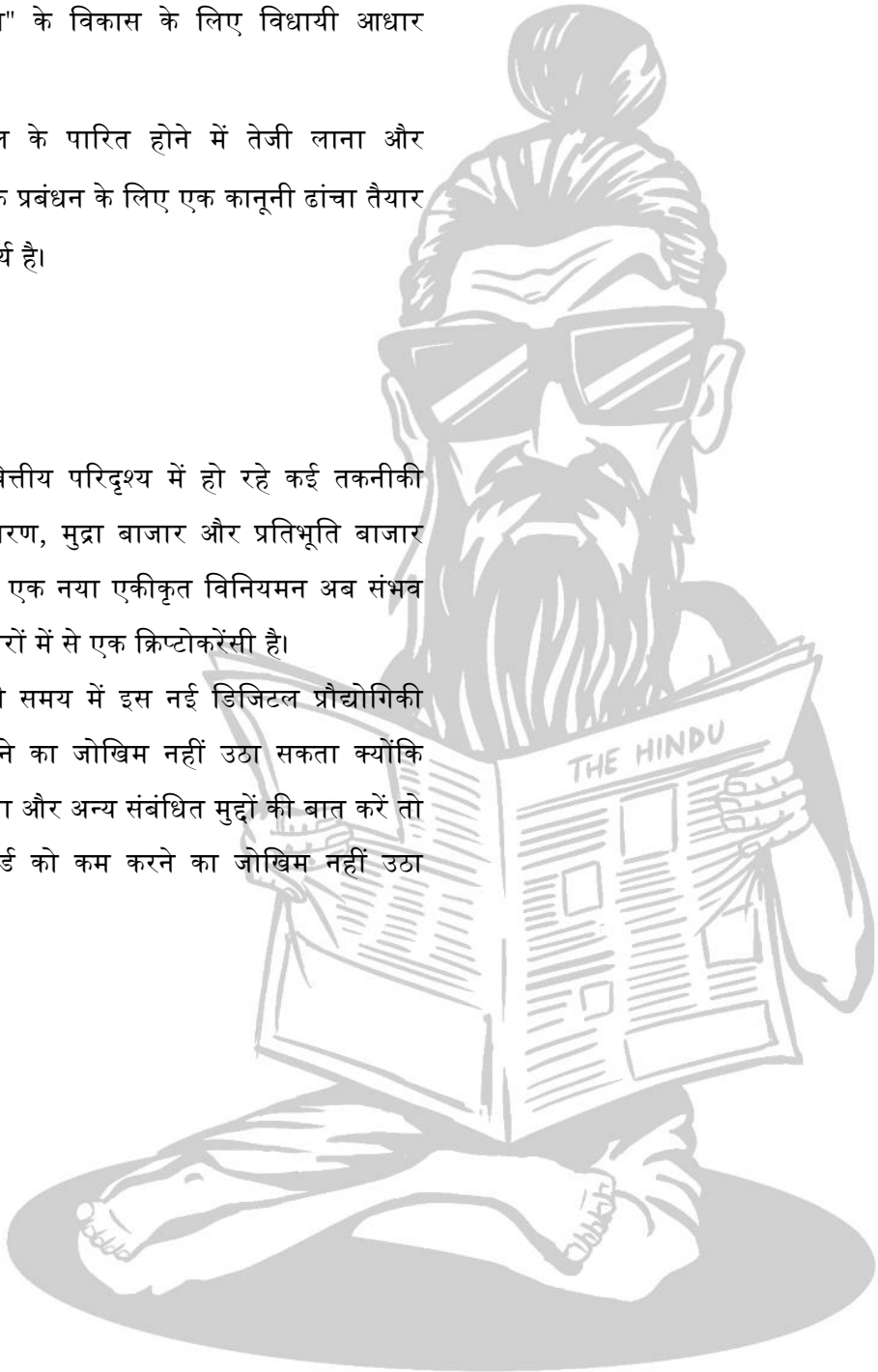
- समकालीन वित्तीय परिदृश्य में हो रहे कई तकनीकी विकास के कारण, मुद्रा बाजार और प्रतिभूति बाजार दोनों के लिए एक नया एकीकृत विनियमन अब संभव है। इन नवाचारों में से एक क्रिप्टोकरेंसी है।
- भारत एक ही समय में इस नई डिजिटल प्रौद्योगिकी क्रांति से चूकने का जोखिम नहीं उठा सकता क्योंकि आंतरिक सुरक्षा और अन्य संबंधित मुद्दों की बात करें तो यह अपने गार्ड को कम करने का जोखिम नहीं उठा सकता है।